8th class sanskrit note | नीति श्लोकाः

पाठ 8 – नीति श्लोकाः

नीति श्लोकाः
(कर्तृवाच्य , कर्मवाच्य)

[नीति श्लोक जीवन को सुचारू रूप..... श्लोक दिये गये हैं ।
1. कस्य दोषः..... सौख्यं निरन्तरम् ।। (3.1)

अर्थ – किसके कुल में दोष नहीं है । कौन रोग से पीड़ित नहीं होता है । व्यसन (आदत) किसको प्राप्त नहीं है । किसकी दोस्ती सदैव रहती है ।
2. आचारः कुलमाख्याति .....भोजनम् ॥ (3.2)

अर्थ – आचार (चाल – चलन) से कुल की जानकारी होती है । भाषण (भाषा) से देश (स्थान) की जानकारी होती है । श्रद्धा से स्नेह की जानकारी होती है । शरीर से भोजन की जानकारी होती है ।

3. अधमा धनमिच्छन्ति .....महतां धनम् ॥ (8.1)

अर्थ – नीच लोग धन की इच्छा करते हैं । मध्यम प्रकार के लोग धन और मान दोनों चाहते हैं तथा उत्तम लोग केवल मान चाहते हैं क्योंकि मान ही महान व्यक्तियों का सबसे बड़ा धन है ।

4. विद्वान् प्रशस्यते लोके....सर्वत्र पूज्यते।(8.20)

अर्थ – विद्वान संसार में प्रशंसा पाते हैं । विद्वानों को सब जगह महत्वपूर्ण स्थान मिलता है । विद्या के द्वारा सब कुछ पाया जा सकता है । विद्या का सब जगह पूजा होती है ।

5.दृष्टिपूर्तं न्यसेत्पादं..... पूतं समाचरेत् ।। (10.2)

अर्थ – दृष्टि से पवित्र कर पैर रखना चाहिए (आँख से देखकर पैर बढ़ाना चाहिए) पानी वस्त्र से छानकर पीना चाहिए । शास्त्र से पवित्र कर (शास्त्र सम्मत) बात बोलना चाहिए और मन से पवित्र कर (सोच – समझकर) आचरण (काम) करना चाहिए ।

6.अनित्यानि शरीराणि .....कर्तव्यो धर्मसंग्रहः ।

अर्थ – शरीर अनित्य (अस्थायी) है । घन – सम्पत्ति भी स्थायी नहीं है । मृत्यु स्थायी और निकट है । इसलिए धर्म संग्रह (धर्माचरण) अवश्य करना चाहिए ।
7. जलबिन्दुनिपातेन..... धर्मस्य च धनस्य च ॥

अर्थ – जैसे जलबुन्दों को संग्रह करने से क्रमशः घड़ा भर जाता है । वही बात है सभी विधाओं , सभी धर्मों और सब प्रकार के धन संग्रह करने में ।
8. यथा धेनुसहस्रेषु वरसो ..... कर्तारमनुगच्छति ।। (13.15)

https://www.evidyarthi.in/

अर्थ -जैसे हजारों गायों के बीच में बछड़ा (गाय का बच्चा) छोड़ दिया जाय तो वह अपने माता के पास पहुँच जाता है । उसी प्रकार मनुष्य जो काम करता है वह किया हुआ काम कर्ता (करने वाले) के पीछे – पीछे चलता है । अर्थात् कर्म फल अवश्य मिलता है ।

शब्दार्थ –

कस्य = किसका / की / के । कुले = वंश में , खानदान में । व्याधिना = रोग से । केन = किससे , किसके द्वारा । सौख्यम् = मित्रता , दोस्ती । आचारः = चाल – चलन । कुलमाख्याति (कुलम् + आख्याति) = वंश को बताता है । सम्भ्रमः = आदर , श्रद्धा , व्याकुलता । वपुः = शरीर । अधमाः = नीच लोग । महताम् = महान् व्यक्तियों का / को / के । प्रशस्यते = प्रशंसित होता है । लोके = संसार में । गौरवम् = महत्त्वपूर्ण । पूज्यते = पूजी जाती है । अनित्यानि = अस्थायी , अस्थिर । विभवो (विभवः) = धन – सम्पत्ति , ऐश्वर्य । शाश्वतः = स्थायी , सदा रहने वाला । सनिहितो (सन्निहितः) = समीप । कर्तव्यो (कर्तव्यः) = करने योग्य , करना चाहिए । धर्मसंग्रहः = धर्म का संचय , धार्मिक कार्य । पूर्यते = पूरा होता है , भरता है । हेतु = कारण । सर्वविद्यानाम् = सभी विद्याओं का / की / के । धेनुसहस्रेषु = हजारों गायों में । वत्सो (वत्सः) = बछड़ा । मातरम् = माता को , माँ के पास । कृतम् = किया गया । कतारमनुगच्छति (कर्तारम् + अनुगच्छति) = कर्ता के पीछे जाता है । दृष्टिपूतम् = आँखों से पवित्र अर्थात् अच्छी तरह देखा गया । न्यसेत् = रखना चाहिए । पादम् = पैर । वस्त्रपूतम् = कपड़े से पवित्र किया हुआ अर्थात् छना हुआ । पिबेज्जलम् (पिबेत् + जलम्) = जल पीना चाहिए । शास्त्रपूतम् = शास्त्रों द्वारा पवित्र किया गया अर्थात् शास्त्रसम्मत । मनःपूतम् = मन से पावन किया गया अर्थात् मन से सोचा गया । समाचरेत् = आचरण करना चाहिए ।

संधि विच्छेद

नास्ति = न + अस्ति (दीर्घ सन्धि) । वपुराख्याति = वपुः + आख्याति (विसर्ग सन्धि) । पिबेजलम् = पिबेत् + जलम् (व्यंजन सन्धि) । वरेद्वाक्यम् = वदेत् + वाक्यम् (व्यञ्जन सन्धि) । नैव = न + एव (वृद्धि संधि) । यच्च = यत् + च (व्यञ्जन सन्धि) । कुलमाख्याति = कुलम् + आख्याति । देशमाख्याति देशम् + आख्याति । स्नेहमाख्याति = स्नेहम् + आख्याति । धनमिच्छन्ति = धनम् + इच्छन्ति । कर्तारमनुगच्छति = कर्तारम् + अनुगच्छति ।

प्रकृति – प्रत्यय – विभागः

आख्याति= आ + √ख्या लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
इच्छन्ति=√इच्छ , लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन प्रशस्यते= प्र +√ शंस् + यक् (कर्मवाच्य) , प्रथम पुरुष , एकवचन
लभते= √लभ् आत्मनेपद , प्रथम पुरुष , एकवचन
पूज्यते=√ पूज + यक् (कर्मवाच्य) , प्रथम पुरुष , एकवचन
न्यसेत्= नि + √अस् विधिलिङ , प्रथम पुरुष , एकवचन
पिबेत=√पा (पिब्) , विधिलिङ् लकार , प्रथम पुरुष ,
वदेत्=√वद् विधिलिङ् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
समाचरेत् =सम् + आ + √चर् , विधिलिङ् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
कर्तव्यः= √कृ + तव्यत् , पुल्लिंग , एकवचन
पूर्यते =√पृ +यक् (य) कर्मवाच्य , प्रथम पुरुष , एकवचन
अनुगच्छति= अनु + √गम् (गच्छ) लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन

https://www.evidyarthi.in/